

11 उपन्यासों पर केन्द्रित आलोचनात्मक ग्रन्थ

2



थर्ड जेण्डर

अतीत और वर्तमान

संपादक : डॉ. एम. फ़ीरोज़ खान

मूल्य : तीन सौ पंचानवे रुपये मात्र

पुस्तक	:	थर्ड जेण्डर : अतीत और वर्तमान (भाग-2)
सम्पादक	:	डॉ. एम. फीरोज़ ख़ान
प्रकाशक	:	विकास प्रकाशन 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2021 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	395/-
ISBN	:	978-93-90688-47-0

अनुक्रम

दो शब्द

1. हाशिए का समाज और आधा आदमी 9
डॉ. रमेश कुमार
2. वैचारिक बदलाव की माँग करता उपन्यास : किन्नर मुनिया मौसी 18
श्यामसुंदर पाण्डेय
3. किन्नर अस्मिता एवं संघर्ष का जीवंत दस्तावेज : अस्तित्व 24
की तलाश में सिमरन
अभिनव
4. श्रापित नहीं सशक्त हैं किन्नर 33
डॉ. मुक्ता टंडन
5. किन्नर संघर्ष की अभिव्यक्ति : श्रापित किन्नर 37
राखी काम्बोज
6. शिखण्डी : स्त्री अस्मिता का आख्यान 43
आनंदप्रकाश त्रिपाठी
7. स्त्री देह से परे स्त्री देह का आख्यान (शिखण्डी-स्त्री देह से परे) 51
डॉ. विमलेश शर्मा
8. ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम : किन्नर के बहाने जीवन संघर्ष की व्यथा-कथा 58
डॉ. लवलेश दत्त
9. एक किन्नर जीवन की संघर्षमयी दास्तान : ऐ ज़िन्दगी तुझे सलाम 68
डॉ. जितेश कुमार

शिखण्डी : स्त्री अस्मिता का आख्यान

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

नई सदी के उत्तर आधुनिक और भूमंडलीकरण के दौर में मिथक और इतिहास केंद्रित लेखन हमारे समय और समाज के यथार्थ से पलायन नहीं, बल्कि बेहतर दुनिया को संजोने का एक सकारात्मक प्रयास कहा जाएगा। एक नया स्वप्न देखने और रचने का सुंदर उपक्रम है। पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं के बहाने अतीत के समय और समाज के घटनाक्रमों से नई सीख लेने की बात भी उल्लेखनीय है। ऐसे तमाम चरित्र जो सदियों पूर्व से हमारी आस्था और विश्वास के संबल और जीवन के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं या फिर अपने युगीन संदर्भ में वे चरित्र हमें बराबर चुनौती देते हैं अथवा अपने गरिमामय व्यक्तित्व के कारण हमें आकर्षित करते हैं, उन्हें आज के संदर्भ में देखने-परखने की खास जरूरत है। राम और कृष्ण कथा के अतिरिक्त अन्यान्य पौराणिक कथाएँ, इतिहास के अनगिनत महान चरित्र और अविस्मरणीय घटनाएँ हमारे लिए विशेष प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। एक रचनाकार इतिहास व पुराण के उन अनावृत्त पृष्ठों को नए सिरे से जाँचने-समझने का प्रयास अपने युगीन संदर्भ और चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में करता है तथा उसे नवीन अर्थ और दृष्टि प्रदान करता है। ऐसा ही कथन शरद सिंह अपने उपन्यास 'शिखण्डी' की 'अपनी बात' में कहती हैं- "चाहे इतिहास हो, विज्ञान हो अथवा साहित्य हो उसका नवीन दृष्टि से पुनर्आकलन, पुनर्लेखन किया जाना चाहिए जैसी कि हमारी भारतीय परंपरा रही है। हमने कभी अपनी संस्कृति की कसौटी पर वर्तमान को परखा है तो कभी वर्तमान के लक्षणों को अपनी प्राचीन संस्कृति में पाया है।" (शिखण्डी : स्त्री देह से परे, पृ. 9)

महाभारत की कथा तो जैसे हमारे युग की कथा हो, वह हमारी चेतना व संवेदना के निकट महसूस की जा सकती है। मनु शर्मा, नरेंद्र कोहली जैसे अनेक कथाकारों ने, बीआर चोपड़ा जैसे फ़िल्मकारों ने महाभारत पर धारावाहिक रच कर भारतीय जनमानस को पर्याप्त उद्देलित और संवेदित किया। नए तथ्य-सत्य से हमें अवगत कराया। डॉ. शरद सिंह को महाभारत के चरित्रों के बीच शिखण्डी का चरित्र सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण



गणेश मिश्र की कविताएं

संघर्ष, प्रेम और प्रकृति की सहचरी

संपादक

प्रो. रमा, डॉ. महेन्द्र प्रजापति

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN : 978-81-951867-5-4

© सम्पादक

मूल्य : ₹ 795

प्रकाशक :

हंस प्रकाशन

(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)

बी-336/1, गली नं० 3, दूसरा पुस्ता,

सोनिया विहार, नई दिल्ली-110094

दूरभाष : 91-9868561340, 7217610640

Email : hansprakashan88@gmail.com

Website : www.hansprakashan.com

विक्रय कार्यालय :

4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली-110002

दूरभाष : 91-7217610640

टाइप सेटिंग : एस० के० ग्राफिक्स

दिल्ली-84

मुद्रक : एस० के० ऑफसेट, दिल्ली

विषय-सूची

भूमिका	(v)
चेतना-जल से भीगी हुई कविताएँ	1
—चंद्रकांत सिंह	
छोटे आकार की बड़ी कविताएँ	13
—दिविक रमेश	
भावनाओं का बहुरंगी कोलाज	18
—रमा	
उदासियों के विरुद्ध कविता	35
—ओम निश्चल	
राकेश मिश्र की कविताई : कविता की मंदाकिनी में एक नई ध्वनि	44
—रवि भूषण पाठक	
अनुभव और अनुभूति की भाव प्रवणता : राकेश मिश्र की कविताएँ	50
—अखिलेश कुमार शर्मा	
गहन दायित्वबोध और बौद्धिक संवेदना के कवि	65
—करुणा शंकर उपाध्याय	
संवेदना के रंग	73
—आनंद प्रकाश त्रिपाठी	
कवि राकेश मिश्र की कविताओं का समीक्षात्मक अनुशीलन	89
—रवि कुमार गोंड	
राकेश मिश्र की कविताओं में प्रकृति और परिवेश	116
—राजेश कुमार शर्मा	
कविता की रचनाधर्मिता	125
—सुधा उपाध्याय	

संवेदना के रंग

आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

कविता के बारे में आमतौर पर यह राय है कि आज कविता का बाजार नहीं है, गद्य में आलोचना और खासतौर पर उपन्यास एवं कहानी की पुस्तकों की डिमांड है। प्रायः नये कवियों के काव्य संग्रह छापने से बड़े प्रकाशक बचते रहे हैं। सोशल मीडिया पर कवियों के नये-नये चेहरे रोज-ब-रोज खिल रहे हैं और कविता की बाढ़ आ गयी है। उनका स्तर और रंग-ढंग कैसा है? फिलहाल हम सभी जानते हैं। पर अच्छी कविताएँ भी पढ़ने को मिलती हैं। आज पाठकों का ध्यान फेसबुक पर लिखी जा रही कविताओं पर भी गया है। प्रतिष्ठित कवि व रचनाकार भी फेसबुक का माध्यम इस्तेमाल कर रहे हैं। कवियों के समूह भी सोशल मीडिया पर सक्रिय रहकर साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए व्याकुल हैं। अमरता की खोज में रचनाकार नित नूतन सृजनात्मक प्रयास में सक्रिय दिखाई देते हैं। नये-नये काव्य प्रयोग भी होते रहे हैं, कुछ गंभीर रचनाएँ भी हमें पढ़ने को मिलती हैं।

इन सबके बावजूद कविता की पुस्तकें धड़ल्ले से छप रही हैं। नये-नये कवि अपनी दस्तक साहित्य के द्वार पर दे रहे हैं। ऐसे माहौल में जब कोई गंभीर और प्राणवान कविता लिखने वाले कवि से हमारी पहचान होती है और कविता का सूरज चमक उठता है, तब सभी का ध्यान उसकी तरफ जाना स्वाभाविक है। वे कविताएँ सभी दृष्टियों से अपनी उत्कृष्टता, नवीनता, सौन्दर्य-बोध, समसामयिक जीवन यथार्थ से संयुक्त होकर बरबस गंभीर पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेती हैं। सहज ही वह कवि हिन्दी की श्रेष्ठ कवि-परंपरा में नये हस्ताक्षर के रूप में उभर आता है और अपनी कविताओं की चमक से हर संवेदनशील पाठक को चमत्कृत कर कविता के नए भविष्य के प्रति हमें आशान्वित करता है।

ऐसा ही एक नया नाम कवि राकेश मिश्र का है, जो कविता के द्वार पर अपनी



‘मैंने जो जिया’ (उद्भ्रांत) पर चतुर्दिक विमर्श

आत्मकथा का आलोक

संपादक

अर्पण कुमार

मैंने जो जिया

उद्भ्रांत

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक / संपादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पुस्तक	:	आत्मकथा का आलोक
संपादक	:	अर्पण कुमार
आई.एस.बी.एन.	:	978-93-89220-76-6
संस्करण	:	प्रथम, सन् 2020
©	:	सम्पादक एवं सहयोगी लेखक
मूल्य	:	₹250.00 मात्र (पेपर बैक संस्करण)
प्रकाशक	:	अमन प्रकाशन 104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ.प्र.) मो. : 09839218516, 9044344050 फोन : 0512-2543480 (ऑफिस)
शब्द सज्जा	:	अनुप्रा ग्राफिक्स, बारादेवी, कानपुर
मुद्रक	:	साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर

AATMKATHA KA AALOK

Edited by: Arpan Kumar

Price : Two Hundred Fifty Rupees Only (Paper Back Edition)

अनुक्रम

सम्पादकीय : ध्रुव भी, ध्याव भी, संभाव भी

vii

आत्मकथा का आलोचक

लेखकीय

1. प्रथम संस्करण की भूमिका : पाठकों से कुछ बातें 41
2. द्वितीय संस्करण की भूमिका : हार्दिक आभार पाठक-पित्रो! 47

समीक्षार्थ

- बीज की यात्रा नये शिखर की ओर कौशल किशोर 51
- इस सदी की बेहतरीन आत्मकथा आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 56
- साहित्य-जगत् की अस्मिता को उभारती आत्मकथा बली सिंह 59
- आत्मकथा विधा में एक नया प्रतिमान रामप्रकाश कुशवाहा 67
- नये ढंग से उपन्यास शैली में रची आत्मगाथा डॉ. शरद पगारे 70
- जीवनानुभव और सत्य-कथनों से भरी आत्मकथा अवध बिहारी श्रीवास्तव 81
- साहस और जिद का आत्मकथ्य से.रा. यात्री 86
- शब्द को साधने की चुनौती शहंशाह आलम 88
- ईमानदार आत्माभिव्यक्ति कल्लोल चक्रवर्ती 93
- जीवन और साहित्य की अस्मिता की खोज डॉ. प्रमिला अवस्थी 96
- आत्मकथा 'मैंने जो जिया' : 102
- उद्भ्रांत से संभ्रांत की ओर दिनेश कुमार माली 110
- उद्भ्रांत जी की आत्मकथा नीलाम्बर कौशिक 115
- जीवन को जैसा भोगा, देखा, वैसा कहा श्याम सुन्दर चौधरी 118
- गज़ब की पठनीयता धीरेंद्र अस्थाना 120
- 'मुन्ना' से 'उद्भ्रांत' की यात्रा के बीच अरुण सिंह 125
- एक अद्भुत आत्मकथा अरुण शीतांश

इस सदी की बेहतरीन आत्मकथा

— आनन्द प्रकाश त्रिपाठी

हिन्दी के बहुप्रतिष्ठित कवि एवं कथाकार रमाकांत शर्मा 'उद्भ्रांत' की बहुचर्चित आत्मकथा 'मैंने जो जिया' (भाग-1—बीज की यात्रा)—को मैंने बहुत तल्लीन होकर पढ़ा और पूरी तरह उस कृति में रचित जीवन संसार, तरह-तरह के चरित्रों, घटना-प्रसंगों, अनुभवों और समय की आवाजों को देखने-सुनने में इस कदर डूब गया कि काफी समय तक इस आत्मकथा के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया। किसी जमाने में हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा के चार खंडों—'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' और 'दशद्वार से सोपान तक' को बड़े धैर्य के साथ पढ़ा था। उन दिनों बहुत समय तक बच्चन की आत्मकथा ने मेरे जैसे बहुतेरे पाठकों और साहित्यकारों के मन-मस्तिष्क को अपने रचनात्मक प्रभाव के घेरे में समेट रखा था। वह ऐतिहासिक महत्व की कृति थी। कुछ उसी तरह की अनुभूति हुई उद्भ्रांत की आत्मकथा 'मैंने जो जिया' को पढ़कर। उद्भ्रांत के समक्ष आत्मकथा विधा में लिखना एक चुनौती थी। इस बात का जिक्र उन्होंने किताब की भूमिका में भी किया है जिसे एक सच्चे लेखक की ईमानदारी ही कहा जाएगा। उन्होंने लिखा है कि "आत्मचित्रण एक चुनौती से कम नहीं। विशेषकर तब जब बच्चन जी की आत्मकथा के रूप में एक बड़े कवि द्वारा स्थापित मानक पहले से मौजूद है।" बच्चन की आत्मकथा आज भी आत्मकथा लिखने वालों के लिए चुनौती है और पथ प्रदर्शिका भी। उद्भ्रांत का यह कहना सच्चाई है कि "जीवन तो सबका अलग होता है, मगर प्रस्तुति और कहने के ढंग में नयापन न हो तो वह पाठक समाज को आकर्षित नहीं करेगी।" एक नयी विधा में उतरने के खतरों को उद्भ्रांत ने सही तौर पर बूझ लिया था और आत्मकथा लिखते हुए एक लेखक की सजगता का उन्होंने परिचय भी दिया। उनकी यह किताब आत्मकथा लेखन की नयी जमीन तलाश करने की एक सफल कोशिश है।

इस आत्मकथा की भूमिका में उद्भ्रांत जी ने पाठकों से अपनी रुचियों को दरकिनार कर एक पर्यवेक्षक की तरह सब कुछ देखने का आग्रह किया है। जाहिर